Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

स्वामी विवेकानन्द का सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

दिवाकर पारीक*

* एमए, नेट (राजनीति विज्ञान) डी 133, आजाद नगर, भीलवाड़ा (राज.) भारत

शोध सारांश – स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारत के उन प्रमुख चिंतकों में हैं जिनके विचारों ने भारतीय समाज, राजनीति तथा राष्ट्रीय चेतना को गहराई से प्रभावित किया। यद्यपि उन्होंने स्वयं को राजनीतिक विचारक नहीं माना, फिर भी उनके चिंतन ने भारतीय राष्ट्रवाद, सामाजिक पुनर्जागरण तथा स्वतंत्रता आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि को नई दिशा प्रदान की। उनका दर्शन व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, नैतिक शक्ति, सामाजिक समरसता तथा आध्यात्मिक चेतना पर आधारित है। प्रस्तुत शोध पत्र में राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता, शक्ति, समाज सुधार, समानता, शिक्षा, मानव निर्माण तथा विश्वबंधुत्व से संबंधित उनके प्रमुख विचारों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा को आधुनिक राष्ट्रीय जीवन से जोड़ते हुए ऐसा वैचारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जो आज भी सामाजिक, शैक्षिक तथा राजनीतिक संदर्भों में समान रूप से प्रासंगिक है।

शब्द कुंजी – स्वामी विवेकानन्द, राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता, मानव निर्माण, शिक्षा, विश्वबंधुत्व।

प्रस्तावना – स्वामी विवेकानन्द (1863–1902) भारतीय नवजागरण के प्रमुख प्रेरक, आध्यात्मिक चिंतक तथा समाज सुधारक थे। उन्होंने भारतीय समाज में आत्मविश्वास, सांस्कृतिक गौरव तथा राष्ट्रीय चेतना का नया संचार किया। यद्यपि वे प्लेटो, अरस्तु अथवा मार्क्स की भाँति पारंपरिक राजनीतिक दार्शनिक नहीं थे और उन्होंने स्वयं कहा था कि 'मैं न राजनीतिज्ञ हूँ, न राजनीतिक आंदोलनकारी' फिर भी उनके विचारों ने आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, राष्ट्रवादी आंदोलन तथा सामाजिक पुनर्जागरण को गहराई से प्रभावित किया।

स्वामी विवेकानन्द का उद्देश्य किसी राजनीतिक व्यवस्था अथवा शासन प्रणाली का प्रतिपादन करना नहीं था। उनका संपूर्ण चिंतन व्यक्ति के नैतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास पर केंद्रित था। उनका विश्वास था कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके नागरिकों के चरित्र, आत्मविश्वास, शिक्षा तथा सांस्कृतिक चेतना में निहित होती है। इसलिए उन्होंने व्यक्ति के निर्माण को राष्ट्रनिर्माण का मूल आधार माना। उनके विचारों में आध्यात्मिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व एक-दूसरे के पूरक हैं तथा दोनों का अंतिम उद्देश्य मानव कल्याण है।

उन्होंने भारतीय समाज की समस्याओं का विश्लेषण करते हुए स्पष्ट किया कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता किसी राष्ट्र के उत्थान के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती। सामाजिक चेतना, शिक्षा, आत्मनिर्भरता, नैतिकता तथा सेवा-भाव के बिना राष्ट्रीय पुनर्निर्माण संभव नहीं है। इसी कारण उनके विचार केवल आध्यात्मिक प्रवचन तक सीमित नहीं रहे, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, राष्ट्रीय जागरण तथा मानव विकास की व्यापक अवधारणा के रूप में विकसित हुए।

स्वामी विवेकानन्द के चिंतन की विशेषता यह है कि उसमें भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और आधुनिक युग की आवश्यकताओं का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने भारतीय आध्यात्मिक विरासत को आधुनिक राष्ट्रनिर्माण की आधारशिला मानते हुए ऐसे समाज की कल्पना की जिसमें समानता, आत्मसम्मान, शिक्षा तथा सेवा-भाव का समन्वित विकास हो। यही कारण है कि उनके विचार आज भी सामाजिक, शैक्षिक तथा राजनीतिक विमर्श में प्रासंगिक बने हुए हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन का विश्लेषण करते हुए उनके राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता, शक्ति, समानता, समाज सुधार, शिक्षा तथा दार्शनिक आधार का अध्ययन किया गया है। साथ ही समकालीन भारत के संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता का भी विवेचन किया गया है।

राष्ट्रवाद एवं राजनीतिक चिंतन – स्वामी विवेकानन्द ने कोई व्यवस्थित राजनीतिक सिद्धांत प्रस्तुत नहीं किया, किंतु उनके विचारों ने भारतीय राष्ट्रवाद को नई वैचारिक दिशा प्रदान की। उनके लिए राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था बल्कि वह सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा राष्ट्रीय आत्मसम्मान का समन्वित रूप था। उन्होंने भारतीय समाज में यह विश्वास उत्पन्न किया कि भारत अपनी सांस्कृतिक शक्ति एवं आध्यात्मिक विरासत के आधार पर पुन: विश्व में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकता है।

राष्ट्रवाद का सांस्कृतिक एवं धार्मिक आधार – स्वामी विवेकानन्द का मत था कि प्रत्येक राष्ट्र के जीवन का एक केंद्रीय तत्त्व होता है जो उसकी पहचान और विकास की दिशा निर्धारित करता है। भारत के संदर्भ में उन्होंने इस तत्त्व को धर्म माना। यहाँ धर्म का आशय किसी संप्रदाय विशेष से नहीं बल्कि उन नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से है जिन्होंने भारतीय समाज को ऐतिहासिक रूप से एकता प्रदान की। उनका विश्वास था कि भारत का पुनर्निर्माण उसकी सांस्कृतिक परंपराओं और आध्यात्मिक चेतना को आधार

बनाकर ही संभव है। इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय जीवन के संगठन में धर्म को एक प्रेरक सांस्कृतिक शक्ति के रूप में देखा।

व्यावहारिक राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रसेवा – स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद को व्यवहारिक जीवन से जोड़ते हुए समाज सेवा को राष्ट्रभक्ति का सर्वोच्च स्वरूप माना। उनका प्रसिद्ध आह्वान 'अगले पचास वर्ष के लिए अन्य सब व्यर्थ के देवताओं को अपने मन से निकाल दो' इसी दृष्टिकोण का परिचायक है। उनके अनुसार देशवासियों की सेवा ही राष्ट्र की सच्ची आराधना है। उन्होंने कर्मयोग के माध्यम से नि:स्वार्थ सेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा लोककल्याण को राष्ट्रीय जीवन का अनिवार्य आधार माना। उनके इन विचारों ने आगे चलकर अनेक स्वतंत्रता सेनानियों तथा राष्ट्रवादी नेताओं को गहराई से प्रेरित किया।

स्वतंत्रता एवं शक्ति की अवधारणा – स्वामी विवेकानन्द ने स्वतंत्रता को मानव जीवन के विकास की मूल शर्त माना। उनके अनुसार 'जीवन सुख और समृद्धि की एकमात्र शर्त चिन्तन और कार्य में स्वतंत्रता है।' उनका विश्वास था कि व्यक्ति तभी अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सकता है जब उसे विचार एवं कर्म की स्वतंत्रता प्राप्त हो। इसलिए उन्होंने स्वतंत्रता को केवल राजनीतिक अधिकार नहीं बल्कि व्यक्ति के मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास का आधार माना।

स्वतंत्रता के साथ उन्होंने शक्ति को भी समान महत्व दिया। उनका प्रसिद्ध कथन है कि 'मेरे धर्म का सार शक्ति है, जो धर्म हृदय में शक्ति का संचार नहीं करता वह मेरी दृष्टि में धर्म नहीं है।' उनके अनुसार शक्ति का वास्तविक अर्थ शारीरिक बल नहीं बल्कि आत्मविश्वास, नैतिक साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति तथा विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता है। उनका मानना था कि निर्भीक और आत्मविश्वासी व्यक्ति ही समाज तथा राष्ट्र के विकास में प्रभावी योगदान दे सकता है।

राष्ट्रीय आत्मविश्वास एवं औपनिवेशिक चेतना का प्रतिरोध– सितम्बर 1893 में शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द का ऐतिहासिक भाषण भारतीय राष्ट्रीय चेतना के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना माना जाता है। इस भाषण ने भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित किया तथा भारतीय समाज में आत्मगौरव और आत्मविश्वास की नई भावना उत्पन्न की। उनके विचारों ने औपनिवेशिक मानसिकता को चुनौती देते हुए यह स्थापित किया कि भारतीय सभ्यता अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति के कारण विश्व समुदाय का मार्गदर्शन करने की क्षमता रखती है।

उनकी ओजस्वी वाणी, निर्भीक व्यक्तित्व तथा नेतृत्व क्षमता से प्रभावित होकर फ्रांसीसी चिंतक रोमां रोलां ने उन्हें 'हिन्दू नेपोलियन' की संज्ञा दी। यद्यपि वे प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलनों से जुड़े नहीं थे, फिर भी उनके विचारों ने विदेशी आधिपत्य के विरुद्ध वैचारिक प्रतिरोध को सुदृढ़ किया तथा राष्ट्रीय पुनर्जागरण को नई दिशा प्रदान की।

सामाजिक चिंतन एवं समाज सुधार– स्वामी विवेकानन्द का सामाजिक चिंतन नैतिक पुनर्जागरण, सामाजिक समरसता तथा मानव गरिमा पर आधारित था। उनका विश्वास था कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति केवल राजनीतिक परिवर्तन से संभव नहीं है। इसके लिए समाज में समानता, शिक्षा, सेवा–भाव तथा नैतिक चेतना का विकास आवश्यक है। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों और रूढ़ियों की आलोचना करते हुए ऐसे सुधारों का समर्थन किया जो भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और मानवीय मूल्यों के अनुरूप हों।

समानता एवं समाजवादी दृष्टिकोण – स्वामी विवेकानन्द ने जातिगत भेदभाव, ऊँच–नीच तथा सामाजिक विषमता का स्पष्ट विरोध किया। अद्वैत वेदान्त से प्रेरित होकर वे प्रत्येक मनुष्य में समान आत्मा का दर्शन करते थे। उनके अनुसार जन्म, जाति अथवा आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव मानवीय गरिमा के विरुद्ध है।

उन्होंने समाज में समान अवसर की अवधारणा का समर्थन किया। उनका मत था कि प्रकृति में विविधताएँ होना स्वाभाविक है, किंतु समाज की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के विकास का समान अवसर प्राप्त हो। इसी संदर्भ में उनका प्रसिद्ध कथन 'मैं इसलिए समाजवादी नहीं हूँ कि यह पूर्ण व्यवस्था है, बल्कि इसलिए कि आधी रोटी न कुछ से अच्छी है।' सामाजिक न्याय के प्रति उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता है। यह कथन किसी वैचारिक आग्रह का नहीं बल्कि समाज के वंचित वर्गों के प्रति उनकी संवेदनशीलता का प्रतीक है।

दलित, निर्धन एवं वंचित वर्गों का उत्थान – स्वामी विवेकानन्द ने समाज के निर्धन, दलित तथा वंचित वर्गों के उत्थान को राष्ट्रनिर्माण का आधार माना। उनका मत था कि जिस समाज में अंतिम व्यक्ति उपेक्षित रहता है, वह वास्तविक प्रगति नहीं कर सकता। उन्होंने मानव सेवा को ईश्वर सेवा के समकक्ष मानते हुए निर्धनों की सहायता को सामाजिक उत्तरदायित्व बताया।

उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम मानते हुए कहा कि यदि गरीब शिक्षा संस्थानों तक नहीं पहुँच सकते, तो शिक्षा को उनके बीच पहुँचना चाहिए। उनके अनुसार समाज का विकास तभी संभव है जब शिक्षा का लाभ सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचे और प्रत्येक व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिले।

नारी शिक्षा एवं सामाजिक उत्थान – स्वामी विवेकानन्द ने नारी शिक्षा को समाज और राष्ट्र की प्रगति का अनिवार्य आधार माना। उनका स्पष्ट मत था कि जिस समाज में महिलाओं को शिक्षा, सम्मान और आत्मनिर्भरता के अवसर उपलब्ध नहीं होते, वह दीर्घकालीन विकास नहीं कर सकता। उन्होंने नारी को केवल पारिवारिक दायित्वों तक सीमित न मानकर राष्ट्रनिर्माण की सक्रिय सहभागी के रूप में देखा। उनके अनुसार महिलाओं की शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता नहीं बल्कि आत्मविश्वास, नैतिकता, विवेक तथा आत्मनिर्भरता का विकास होना चाहिए। इस प्रकार नारी सशक्तिकरण उनके सामाजिक चिंतन का महत्वपूर्ण अंग है।

समाज सुधार की अवधारणा – स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़ियों तथा सामाजिक कुरीतियों की आलोचना की, किंतु वे समाज सुधार के लिए उग्र अथवा हिंसात्मक उपायों के समर्थक नहीं थे। उनका विश्वास था कि स्थायी परिवर्तन शिक्षा, नैतिक जागरण तथा आत्मचेतना के माध्यम से ही संभव है।

उन्होंने शंकराचार्य, रामानुज तथा चौतन्य जैसे आचार्यों की परंपरा का उल्लेख करते हुए सामाजिक पुनर्निर्माण को समानता, आध्यात्मिक एकता तथा सार्वभौमिक कल्याण के आधार पर आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही उन्होंने जाति–व्यवस्था की कठोरता को कम कर उसे अधिक मानवीय एवं उदार बनाने की वकालत की, जिससे सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया जा सके।

कर्तव्य, मानव सेवा एवं विश्वबंधुत्व– स्वामी विवेकानन्द ने अधिकारों की अपेक्षा कर्तव्यों को अधिक महत्व दिया। उनका मत था कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने सामाजिक एवं नैतिक दायित्वों का ईमानदारी से पालन करे,

तो समाज में अधिकारों की रक्षा स्वत: सुनिश्चित हो जाएगी। उनके अनुसार मानव जीवन की सार्थकता केवल व्यक्तिगत हितों की पूर्ति में नहीं बल्कि व्यापक लोककल्याण के लिए स्वयं को समर्पित करने में निहित है।

उन्होंने मानव सेवा को ईश्वर की उपासना के समान माना और समाज के पीड़ित एवं वंचित वर्गों की सेवा को धर्म का वास्तविक स्वरूप बताया। उनके विचार में देशभक्ति और समाज सेवा परस्पर पूरक हैं तथा दोनों का अंतिम उद्देश्य मानव कल्याण है।

इसी व्यापक दृष्टि के कारण स्वामी विवेकानन्द संकीर्ण राष्ट्रवाद के स्थान पर विश्वबंधुत्व और अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव के समर्थक थे। उन्होंने जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव को स्वीकार नहीं किया। उनके अनुसार सभी धर्मों का मूल उद्देश्य मानवता की सेवा, नैतिक उन्नति तथा आध्यात्मिक विकास है। इसलिए पारस्परिक सम्मान, सहिष्णुता और सहयोग ही विश्वशांति तथा मानवीय एकता के आधार बन सकते हैं।

शैक्षिक एवं दार्शनिक आधार – स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन की आधारशिला उनका शिक्षा-दर्शन है। उनका विश्वास था कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब उसके नागरिक शिक्षित, चरित्रवान, आत्मनिर्भर तथा उत्तरदायी हों। इसी कारण उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास का सबसे प्रभावी साधन माना।

उन्होंने उस शिक्षा प्रणाली की आलोचना की जिसका उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना या रोजगार प्राप्त करना था। उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य व्यक्ति की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करना है। इसी संदर्भ में उन्होंने शिक्षा का उद्देश्य 'मानव निर्माण (Man&making)', 'चरित्र निर्माण' तथा 'राष्ट्र निर्माण' बताया।

वे व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी शिक्षा के समर्थक थे। उनका मत था कि शिक्षा व्यक्ति में आत्मबल, आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करे, जिससे वह अपने ज्ञान का उपयोग व्यक्तिगत उन्नति के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए भी कर सके।

स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय अध्यात्म और आधुनिक विज्ञान के समन्वय पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि केवल भौतिक उन्नति या केवल आध्यात्मिक साधना मानव विकास के लिए पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति का वास्तविक विकास तभी संभव है जब उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक सभी आयामों का संतुलित विकास हो। इसलिए उन्होंने ऐसी शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया जो आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भारतीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के साथ समन्वित कर सके।

दार्शनिक आधार एवं समकालीन प्रासंगिकता – स्वामी विवेकानन्द का सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन उनके व्यापक दार्शनिक अध्ययन तथा आध्यात्मिक अनुभवों का परिणाम था। उन्होंने एक ओर कांट, हेगेल, मिल, स्पेंसर तथा शोपेनहावर जैसे पाश्चात्य दार्शनिकों का अध्ययन किया, वहीं दूसरी ओर वेद, उपनिषद तथा भारतीय दार्शनिक परंपरा का भी गहन अनुशीलन किया। इस व्यापक बौद्धिक पृष्ठभूमि ने उनके चिंतन को संतुलित, व्यावहारिक एवं सार्वभौमिक स्वरूप प्रदान किया।

यद्यपि उन्होंने अनेक दार्शनिक विचारधाराओं का अध्ययन किया, किंतु अद्वैत वेदान्त ने उनके चिंतन को सर्वाधिक प्रभावित किया। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में एक ही दिव्य चेतना विद्यमान है। यही सिद्धांत उनके सामाजिक समानता, मानव गरिमा, धार्मिक सहिष्णुता तथा विश्वबंधुत्व संबंधी विचारों का मूल आधार है। उन्होंने व्यक्ति और समाज के संबंध को संघर्ष के स्थान पर सहयोग, नैतिकता तथा आध्यात्मिक एकता के आधार पर समझने का प्रयास किया।

वर्तमान समय में भी स्वामी विवेकानन्द का चिंतन अत्यंत प्रासंगिक है। वैश्वीकरण, सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक संकट तथा नैतिक मूल्यों के क्षरण के दौर में उनके द्वारा प्रतिपादित आत्मनिर्भरता, चरित्र निर्माण, सेवा-भाव, सामाजिक समरसता तथा राष्ट्रीय आत्मविश्वास के सिद्धांत समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। विशेषत: मूल्यपरक शिक्षा, उत्तरदायी नागरिकता तथा समावेशी समाज के निर्माण की दृष्टि से उनके विचार आज भी मार्गदर्शक बने हुए हैं।

निष्कर्ष – स्वामी विवेकानन्द का सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन आधुनिक भारत के वैचारिक इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यद्यपि उन्होंने स्वयं को राजनीतिक विचारक नहीं माना, फिर भी उनके विचारों ने भारतीय राष्ट्रवाद, सामाजिक पुनर्जागरण तथा राष्ट्रीय आत्मविश्वास को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आधार प्रदान करते हुए सेवा, नैतिकता, स्वतंत्रता तथा आत्मबल को राष्ट्रनिर्माण के प्रमुख तत्वों के रूप में स्थापित किया।

सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने समानता, मानव गरिमा, महिला शिक्षा, वंचित वर्गों के उत्थान तथा समाज सुधार पर विशेष बल दिया। उनका विश्वास था कि सामाजिक परिवर्तन का वास्तविक आधार शिक्षा, नैतिक जागरण तथा आत्मचेतना है। इसी प्रकार अधिकारों की अपेक्षा कर्तव्यों को महत्व देकर उन्होंने समाज एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ किया।

शिक्षा के संबंध में उनकी 'मानव निर्माण', 'चरित्र निर्माण'तथा 'राष्ट्र निर्माण' की अवधारणा आज भी समान रूप से प्रासंगिक है। उन्होंने ऐसी शिक्षा का समर्थन किया जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर, नैतिक, आत्मविश्वासी तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त बनाए। भारतीय अध्यात्म और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय पर आधारित उनका शिक्षा-दर्शन समकालीन शिक्षा व्यवस्था के लिए भी प्रेरणादायक है।

समग्रत: स्वामी विवेकानन्द का चिंतन केवल आध्यात्मिक दर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामाजिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक पुनर्निर्माण की व्यापक दृष्टि प्रस्तुत करता है। राष्ट्रवाद, मानव सेवा, सामाजिक समरसता, विश्वबंधुत्व तथा चरित्र निर्माण से संबंधित उनके विचार वर्तमान भारत की सामाजिक एवं राजनीतिक चुनौतियों के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। इसलिए उनके सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन का अध्ययन आधुनिक भारत के वैचारिक विकास तथा राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. महेन्द्र कुमार प्रेमी. (2012). 'संस्कृति, शिक्षा एवं धर्म के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद का दर्शन: एक दर्शन शास्त्रीय विवेचन'- Research Journal of Humanities and Social Sciences, 3(3), 381-385.
2. द्विवेदी, निशा. (2024). 'स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन' International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST) 2(6), 18–

22- https://doi-org/10-61778/ijmrast-v2i6-62

3. कुमार, बृजेश. (2024). 'आधुनिक भारतीयकरण के परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार' International Journal of Social Science Research (IJSSR),1(1), P-98–103.
4. यादव, विवेक कुमार, – कुमारी, सरिता. (2026). 'भारतीय नारी के प्रति स्वामी विवेकानन्द के विचार' Wisdom Vortex: International Journal of Social Science and Humanities, 2(1), 41–44. https://doi-org/10-64429/wvijsh-02-01-018
5. मिश्र, ज्योति, – श्रीवास्तव, अनुभा. (2026). 'वैश्विक मंच पर भारत की छवि–निर्माण में स्वामी विवेकानन्द का योगदान' Idealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS), 5(1), P-146–151.
6. चौहान, संजीव कुमार, – शर्मा, योगेश प्रसाद. (2022). 'स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता' Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 9(8), P-52 & 56.
7. शर्मा, रामकृष्ण. (2022). 'स्वामी विवेकानन्द के विचारों की शैक्षिक एवं सामाजिक उपादेयता' International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), 10(7), P-246 & 250.
8. स्मिता. (2021). 'भारतीय राष्ट्रवाद में स्वामी विवेकानन्द का योगदान' International Journal of History, 3(2), 127–128.
9. वर्मा, वी. पी. (2026). 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन (पुनर्मुद्रित संस्करण). लक्ष्मी नारायण अग्रवाल'ISBN: 978-93-86828-29-3.
10. चेनाराम, 'स्वामी विवेकानंद के राजनीतिक विचार' International Journal of Education, Modern Management,Applied Science & Social Science (IJEMMASSS), ISSN: 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No-01(II)January –March, 2024,P-198-201.
11. डॉ. अनिल कुमार सैनी, 'वर्तमान समय में स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी विचारों की भूमिका',The Academic (An Online Peer Reviewed / Refereed Journal of Multidisciplinary Research), Volume 3 | Issue 1 | January 2025] ISSN: 2583-973X, P-722.
12. The Complete Works of Swami Vivekananda, 4, P-314.
13. डॉ. पुखराज जैन, 'प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक', साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020.
14. रामरतन एवं रूचि त्यागी,'भारतीय राजनीतिक चिन्तन', मयूर पेपर बैक्स, 2003.

****